राजस्थान के अलवर जिले का पर्यटन पैटर्न: एक केस अध्ययन

*डॉ. साधु राम गुर्जर

प्रत्येक राज्य हमेशा पर्यटन को राजस्व के साथ-साथ संस्कृति के आदान-प्रदान के लिए भी प्रेरित करता है। पिछले कुछ दशकों में दुनिया भर में लोगों द्वारा विशाल जैव विविधता की खोज की गई है। और यह प्रवृत्ति भारत जैसे विकासशील देशों में अधिक है। भारत में विशाल सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक अपार विविधता है। यह लंबे समय तक ब्रिटिश, मुगल और स्थानीय राजाओं जैसी विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण रहा है। आजकल ये स्थितियाँ पर्यटन केंद्र में बदल जाती हैं और यह एक प्रमुख विकास रणनीति है। यह सर्वेक्षण सरिस्का बाघ परियोजना क्षेत्र में किया गया था और भारत के राजस्थान के अलवर पर्यटन विभाग से द्वितीयक डेटा भी एकत्र किया गया था। परिणामों से पता चलता है कि 2005 से 2009 तक पर्यटकों की कुल संख्या में गिरावट अलवर जिले में 70% थी जबकि राजस्थान में यह 33% तक बढ़ गई थी। यदि हम घरेलू और विदेशी पर्यटकों का विश्लेषण करें तो राजस्थान की तुलना में अलवर क्षेत्र में घरेलू पर्यटकों में भारी गिरावट आएगी।

परिचय

राजस्थान का अलवर जिला झीलों, पुराने किलों और निकटवर्ती राज्य हरियाणा और भारत की राष्ट्रीय राजधानी की मिश्रित संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। इसके अलावा सरिस्का बाघ अभ्यारण्य भी स्थित है, और यह विशाल जैव विविधता के कारण अलवर में पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण है। भारत पहले से ही एक कृषि प्रधान राज्य रहा है, इसकी प्रकृति और धर्म, जातीयता में विविधता और गांवों में रहने वाले लोगों का एक बड़ा समूह जैव विविधता में स्वाद का सार जोड़ता है। जैव विविधता का अर्थ है पृथ्वी पर पाए जाने वाले जीवन की विविधता और सभी प्राकृतिक प्रक्रियाएँ। इसमें पारिस्थितिकी तंत्र, आनुवंशिक और सांस्कृतिक विविधता, और इनके और सभी प्रजातियों के बीच संबंध शामिल हैं। भारत और दुनिया भर में जैव विविधता संरक्षण जटिल और अक्सर विवादास्पद है (टोरी, 2010; टोरी और हेरमैन, 2010)। तेजी से बढ़ती जनसंख्या और औद्योगिक

विकास के कारण इसमें तेजी से कमी आई।

घने वन क्षेत्र तेजी से सिकुड़ रहे हैं। जानवरों के प्राकृतिक आवास में अधिक शहरीकरण और कृषि पद्धतियाँ हावी हो रही हैं (यादव और गुप्ता, 2006)। इसने जानवरों के लिए अशांति पैदा कर दी जिससे जानवरों की दिनचर्या और विशेष रूप से उस आवास में प्रजनन गतिविधियाँ प्रभावित हुईं। कई राष्ट्रीय उद्यानों में, आरक्षित वन जानवरों की प्रजनन दर और आबादी में गिरावट का सामना कर रहे थे। एक तरह से स्थानीय सरकारी एजेंसियों ने प्रकृति में सामंजस्य के साथ राज्य का राजस्व प्राप्त करने के लिए पर्यटन को लोकप्रिय बनाया। वन्य जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को नियंत्रित करने वाले कई कानून और आधिकारिक नीतियां हैं, लेकिन इसमें स्थानीय आबादी और उनके पर्यावरण पर शायद ही ध्यान दिया जाता है।

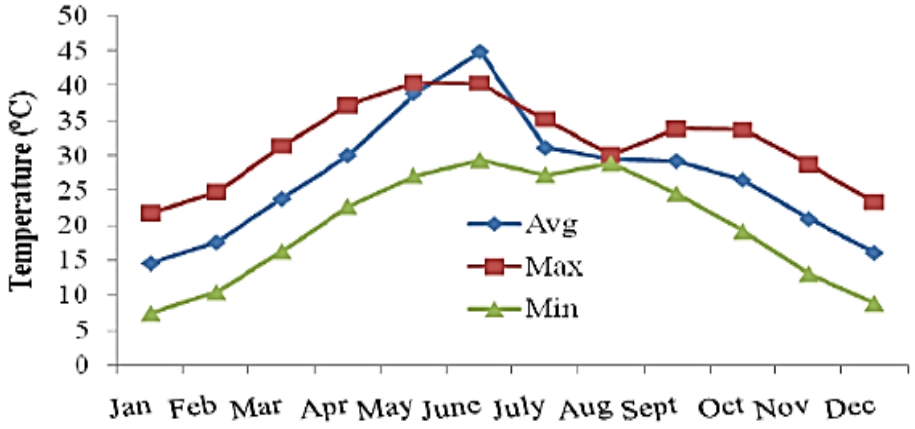

चित्र 1. अध्ययन अवधि के दौरान तापमान भिन्नता।

वर्ष	भारतीय	परदेशी	कुल
2005	18787298	1131164	19918462
2006	23483287	1220164	24703451
2007	25920529	1401042	27321571
2008	28358918	1477646	29836564
2009	25558691	1073414	26632107

यहां रहने वाले गरीब लोगों की आय के वैकल्पिक स्रोत खराब होने के कारण वनों का ह्रास और भूमि का कटाव हुआ, जिसने उन्हें प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन करने के लिए मजबूर किया। ग्रामीण गांवों में बढ़ती आबादी के कारण आसपास के राष्ट्रीय उद्यान या प्राकृतिक आवास की महत्वपूर्ण लागत जुड़ी हुई है। यह जानवरों, जंगल की हानि, सामाजिक और राजनीतिक कमी हो सकती है। सबरवाल (2001) ने 'पीपुल्स, पार्क्स एंड वाइल्डलाइफ: टुवर्ड्स कोअसिस्टेंस' पुस्तक में वर्णित किया है कि जैव विविधता में गिरावट और भूमि उपयोग पैटर्न में बदलाव भूजल और सतही जल के विचलन के कारण होता है, जिसके परिणामस्वरूप जलधाराएं और अन्य जल निकाय लवणता के कारण सूख रहे हैं।, और कीटनाशकों और अन्य रसायनों से प्रदूषण। एक अन्य मामले में, वासन द्वारा 2005 में 'जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली' में जैव विविधता में गिरावट के रुझान प्रकाशित किए गए और बताया गया कि कुछ क्षेत्रों में पौधों की विदेशी प्रजातियों के आक्रमण के कारण जैव विविधता में गिरावट आई है, यानी उत्तर भारत के शुष्क भागों में प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा ने इसकी जगह ले ली है। बबूल नाइटोटिका प्रजाति. इसलिए इस पृष्ठभूमि में, हमने सरिस्का की जैव विविधता और उनके आर्थिक विकास पर पर्यटक प्रभाव के बारे में लोगों के विचार जानने के लिए एक प्राथमिक सर्वेक्षण किया।

सामग्री और विधियाँ फ़ील्ड

कार्य जनवरी से अप्रैल, 2011 तक राजस्थान के अलवर जिले में हुआ। व्यक्तिगत और समूह साक्षात्कार के साथ-साथ सहभागी अवलोकन और अनौपचारिक साक्षात्कार, जिला पर्यटन कार्यालय आदि जैसी सरकारी एजेंसियों से एकत्र किए गए डेटा। पर्यटन और कृषि उत्पादन प्रणाली पर भौगोलिक स्थिति का प्रभाव राज्य के राजस्व सृजन को भी प्रभावित कर रहा है (लता, 2013बी)। अलवर सभी सुविधाओं से युक्त है और देश की राजधानी दिल्ली से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। इसमें कई ऐतिहासिक और पर्यटन स्थल हैं, जैसे नीलकंठ, भानगढ़, जैन मंदिर और काकाडी किला। इसके अलावा यह केवल सरिस्का (चंदेल, 2011) के लिए प्रसिद्ध है। सरिस्का टाइगर रिजर्व 1978 में बनाया गया था, जो राजस्थान के अलवर जिले में स्थित है। रिजर्व का वर्तमान क्षेत्रफल 866 वर्ग किमी है। तीन कोर एरिया और बफर जोन वाला। वन मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती और उष्णकटिबंधीय कांटेदार हैं। इसमें 180 विभिन्न पक्षी प्रजातियाँ, 23 प्रकार के स्तनधारी, 33 प्रकार की घास और झाड़ियों और जड़ी-बूटियों सहित 200 से अधिक वृक्ष प्रजातियाँ हैं, 1991 की जनगणना के अनुसार कोर क्षेत्र के अंदर 10,344 आबादी वाले 24 गाँव और 246 गाँव की पहचान की गई है। बफर जोन में 243667 जनसंख्या की पहचान की गई (सुल्ताना, 2013)। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर पहाड़ी अलवर जिसे राजस्थान का सिंह द्वार

कहा जाता है। भौगोलिक रूप से उत्तर पूर्व में स्थित है, 27°4' - 28°4' उत्तर से 76°7 से 77°13 पूर्व तक। यह दिल्ली से लगभग 160 किमी दक्षिण में और राजस्थान की राजधानी जयपुर से लगभग 150 किमी उत्तर में स्थित है। अलवर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) का हिस्सा है। अध्ययन अवधि के दौरान तापमान में उतार-चढ़ाव देखा गया (चित्र 1)। केंद्रीय प्रवृत्ति मापदंडों की सहायता से डेटा का विश्लेषण किया गया।

परिणाम और चर्चा

अध्ययन के दौरान राजस्थान में पर्यटकों की संख्या वर्ष 2006 में 24703451 बढ़ रही थी, जो वर्ष 2005 की तुलना में 24% अधिक है, और वर्ष 2007 और 2008 में यह प्रवृत्ति क्रमशः 10 और 9% बढ़ी (सारणी) 1). लेकिन यदि हम देखें तो वर्ष 2008 से 2009 तक पर्यटक वृद्धि में 10% की कमी आई, जो दर्शाता है

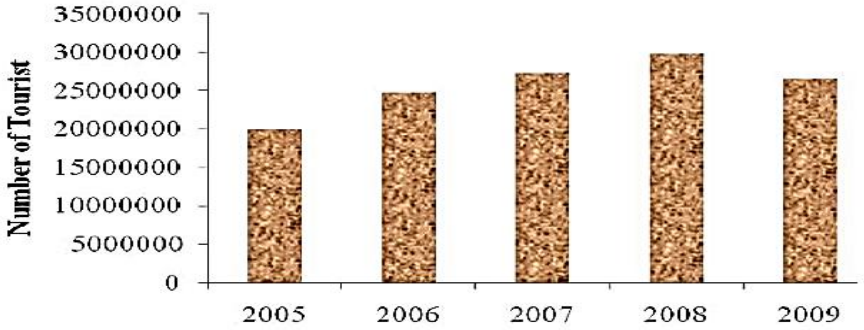

चित्र 2. राजस्थान में आने वाले पर्यटकों की संख्या।

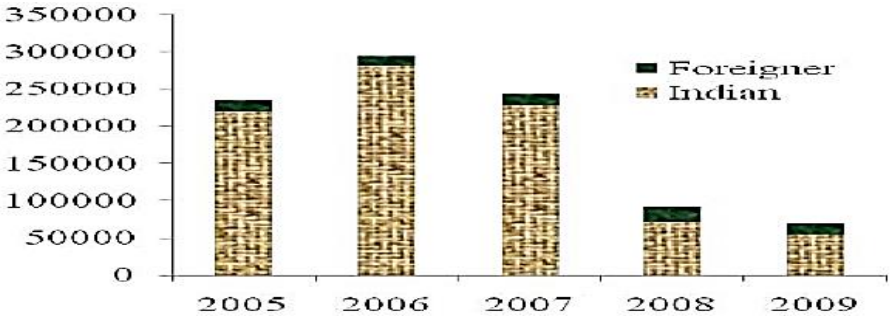

चित्र 3. राजस्थान के अलवर में पर्यटकों की संख्या।

पर्यटकों की संख्या में भारी कटौती. 2005 से 2006, 2006 से 2007, 2007 से 2008 तक भारतीय पर्यटकों की संख्या में 4695987, 2437242 और 2438389 की वृद्धि हुई, जबकि 2008 से 2009 में घटकर 2800227 हो गई (चित्र 2)। पर्यटकों की बढ़ती वृद्धि पर्यटकों के लिए अनुकूल परिस्थितियों और वैश्विक जनसमूह की भारी रुचि के कारण थी। अलवर में पर्यटक जनसंख्या में भी 2005 से 2007 तक सकारात्मक वृद्धि हुई, जो 234846 से 244221 थी, लेकिन 2005 के आधार वर्ष से 60 और 75% के साथ घट गई (चित्र 3)। प्राथमिक सर्वेक्षण में कोर क्षेत्र के लोगों का कहना है कि ग्रामीणों के अधिक हस्तक्षेप के कारण क्षेत्र की जैव विविधता में गिरावट आ रही है। 2000 में, कुमार और अन्य ने 'भारत के लिए जैव विविधता संरक्षण प्राथमिकताएं निर्धारित करना' नामक पुस्तक लिखी और बताया कि प्रजातियों के लिए खतरा मुख्य रूप से उनके आवास के क्षेत्र में गिरावट, आवास के विखंडन और आवास की गुणवत्ता में गिरावट के कारण है। कुछ स्तनधारियों के शिकार का मामला।

विखंडन से विलुप्त होने का खतरा बढ़ जाता है क्योंकि अलग-थलग उप-जनसंख्या फिर से आबाद हुए बिना एक-एक करके विलुप्त हो सकती है (लता, 2013ए; केविन, 2000)। छोटी उप-जनसंख्या में स्टोकेस्टिक गिरावट से उनके विलुप्त होने की संभावना अधिक हो गई है, और उप-जनसंख्या में आनुवंशिक परिवर्तनशीलता में कमी से यह और भी बढ़ गया है, जिसके परिणामस्वरूप पहले से ही प्रतिबंधित सीमा वाली पृथक प्रजातियां इन खतरों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील हैं (क्ले, 1988)। कनाडा के प्रेयरी क्षेत्रों में कृषि भूमि के रूपांतरण के परिणामस्वरूप 87% देशी छोटी घास के प्रेयरी निवास स्थान, 81% देशी मिश्रित घास के प्रेयरी निवास स्थान, लगभग सभी लंबी घास के प्रेयरी निवास स्थान और 84% देशी एस्पेन पार्कलैंड निवास स्थान का नुकसान हुआ है। (सीबीआईएन, 1998; बेहरा और नायक, 2013)। दुर्भाग्य से, खाद्य उत्पादन की बढ़ती मांग मध्यम कृषि मूल्य वाली भूमि को कृषि भूमि में बदलने की दर को और तेज कर रही है।

निष्कर्ष

जैव विविधता जीवन की विविधता की डिग्री है। यह किसी क्षेत्र, बायोम या ग्रह के भीतर आनुवंशिक भिन्नता, प्रजाति भिन्नता या पारिस्थितिकी तंत्र भिन्नता को संदर्भित कर सकता है। यह क्षेत्र के लिए राजस्व का पर्याप्त स्रोत साबित हो रहा है ताकि क्षेत्र आर्थिक रूप से विकसित हो सके। अध्ययन से पता चला है कि मानवीय गतिविधियों के हस्तक्षेप से सरिस्का टाइगर रिजर्व की जैव विविधता प्रभावित होती है, जिसका सीधा असर पर्यटकों की संख्या पर पड़ता है। कोर क्षेत्र में

रहने वाले लोगों के बीच जागरूकता की मदद से, सरिस्का की जैव विविधता और अलवर में पर्यटन की संभावना को बचाया जा सकता है।

***भूगोल विभाग**
राजस्थान विश्वविद्यालय

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. कुमार ए, वॉकर एस, मोलुर एस (2000). भारत में जैव विविधता संरक्षण प्राथमिकताओं की स्थापना. डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया, नई दिल्ली पृष्ठ 341-425.
2. चंदेल ए (2011). सरिस्का टाइगर रिजर्व: सतत विकास की ओर दृष्टिकोण. समावेशी और सतत विकास पर सम्मेलन. doi

   www.newhealth.in/ojs/index.php/ISG/article/download/4/4.
3. सुल्ताना ए (2013). राजस्थान, भारत के सरिस्का टाइगर रिजर्व के पक्षियों की एक अद्यतन चेकलिस्ट. जे. थ्रेटेंड टैक्सा. 5(13):4791-4804.
4. वासन एस (2005). कानून के नाम पर, झारखंड वन में वैधता, अवैधता और प्रथा. इको. पॉलिटिकल वीकली 40(41):4447-4450.
5. टोरी एमसी (2010). भारत में स्थानीय समुदायों के विकास और संरक्षण दृष्टिकोण: बहस, चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ. इंट. जे. एनवायरन. साइ. 1(5):871-833.
6. टोरी एमसी, हेरमैन टीएम (2010). जैव विविधता संरक्षण बनाम ग्रामीण विकास: अलवर जिला, राजस्थान, भारत का केस स्टडी. जे. ह्यूम. इकोल. 31(2):93-101.
7. क्ले जे डब्ल्यू (1988). स्वदेशी लोग और उष्णकटिबंधीय वन, सांस्कृतिक उत्तरजीविता, कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स.
8. केविन जीजे (2000). जैव विविधता में वैश्विक पैटर्न. नेचर 405(6783):220–227. doi:10.1038/35012228.
9. लता एम (2013a). जैव विविधता का संरक्षण करें और पृथ्वी को बचाएं. रीडर्सशेल्फ. 9(7):10-11.
10. लता एम (2013b). कृषि में भूगोल की भूमिका. रीडर्सशेल्फ 9(7):18-19.

11. बेहरा आरएन, नायक डीके (2013). मेघालय पठार, भारत में जनसंख्या वृद्धि, कृषि भूमि उपयोग परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा के लिए निहितार्थ.
http://www.iussp.org/en/event/17/programme/paper/5600.
12. सीबीआईएन (1998). जैव विविधता पर प्रभाव. http://redpath-museum.mcgill.ca/Qbp/3.Conservation/impacts.htm#2.1.
13. सबरवाल वी, रंगराजन एम, कोठारी ए (2001). लोग, पार्क और वन्यजीव: सह-अस्तित्व की ओर. ओरिएंट लॉन्गमैन, नई दिल्ली.
14. यादव एएस, गुप्ता एसके (2006). भारत में सरिस्का टाइगर प्रोजेक्ट में लकड़ी की प्रजातियों की विविधता पर सूक्ष्म पर्यावरण और मानव वितरण का प्रभाव. राजस्थान विश्वविद्यालय पृष्ठ 25-126.